IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 1, January 2025

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का संस्कृत साहित्य को अवदान

प्रो. आशुतोष गुप्त

शोध निर्देशक, संस्कृत - विभाग

gupta.ashutosh38gmail.com

सुमन

शोधार्थिनी, संस्कृत - विभाग

skm437731gmaill.com

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड

सार

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का जन्म 15 फरवरी 1949 को मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले में हुआ। भारतीय कालगणना के अनुसार आपकी जन्मतिथि फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया, विक्रम संवत् 2005 है। प्रतिभा के धनी प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार, निबन्धकार, लेखक, उपन्यासकार अनुवादक एवं समीक्षक हैं। इनके पितामह का नाम रामप्रसाद त्रिपाठी, पिता का नाम गोकुल प्रसाद त्रिपाठी जी संस्कृत एवं हिन्दी के विद्वान् एवं समीक्षक थे जो कि महाराज महाविद्यालय छतरपुर में संस्कृत के प्राध्यापक थे। गोकुल प्रसाद जी की दो धर्मपत्नियाँ गोकुलबाई और शकुन्तला देवी थीं, इनकी माता गोकुलबाई थी। त्रिपाठी जी का विवाह श्री शिवदत्त भारद्वाज की पुत्री सत्यवती जी के साथ1974 में सम्पन्न हुआ। इनकी तीन पुत्रियाँ प्रियंवदा, मालविका,और चिन्मयी त्रिपाठी हैं। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की शिक्षा-दीक्षा एम.ए से पीएच. डी. पर्यन्त सागर विश्वविद्यालय में हुई। प्रो. त्रिपाठी को उनकी सारस्वतसाधना के लिए अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्टीय पुरस्कारों से सभाजित किया जाता रहा है। जिनमें उनकी साहित्य रचना 'सन्धानम्' के लिए प्राप्त साहित्य अकादमी पुरस्कार (1994), कालिदास पुरस्कार (1999), संस्कृत साहित्य अकादमी, संस्कृति मंत्रालय की ओर मानवी बालोपन्यास 2023 का संस्कृत बाल साहित्य पुरस्कार इस प्रकार इनको 40 से अधिक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने संस्कृत साहित्य के अक्षय भण्डार को भरा है। कविता, गजल, नाटक , उपन्यास, और निबन्ध के क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाकर प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने जो यश प्राप्त किया और अपने कृतित्त्व के द्वारा जो लोकचेतनापरक, सांस्कृतिक और मानवतावादी सन्देश दिया है , वह न केवल संस्कृत साहित्य के लिए अपितु सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के लिए भी गोरवपूर्ण योगदान है।

संकेत शब्द – प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, साहित्य , महाकवि , सन्धानम्।